

“किस चीज़ पर इतना घमंड तुझे?”

घमंड सत्ता का हो, धन का हो या पद का—समय किसी का गुलाम नहीं!

इंसान आखिर किस चीज़ पर इतना घमंड करता है? कुर्सी पर? सत्ता पर? धन पर? पद पर? लोकप्रियता पर? भीड़ पर? या इस भ्रम पर कि वह हमेशा ताकतवर रहेगा? इतिहास गवाह है—जिसने भी अपनी ताकत को स्थायी समझा, समय ने उसे उसकी औकात याद दिला दी।

आज समाज का सबसे बड़ा संकट केवल भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी या असमानता नहीं है; उससे बड़ा संकट है अहंकार। सत्ता का अहंकार, पद का अहंकार, पैसे का अहंकार और अपनी पहुंच का अहंकार। जनप्रतिनिधि जनता के सेवक बनकर आते हैं, लेकिन कई बार कुर्सी मिलते ही वही जनता उन्हें बोझ लगने लगती है। सवाल पूछो तो नाराज़गी, जवाब मांगो तो आरोप, अधिकार मांगो तो बहाने—आखिर लोकतंत्र में मालिक कौन है?

जिस वोट ने आपको कुर्सी दी, वही वोट एक दिन आपको कुर्सी से उतार भी सकता है। जिस जनता की तालियों पर आज आपको गर्व है, वही जनता कल आपके काम का हिसाब मांग सकती है। इसलिए सत्ता को सम्मान समझिए, साम्राज्य नहीं; जिम्मेदारी समझिए, विशेषाधिकार नहीं।

धन पर घमंड करने वालों को याद रखना चाहिए कि पैसा सुविधाएं खरीद सकता है, सम्मान नहीं। पद पर घमंड करने वालों को समझना चाहिए कि पद की अवधि सीमित होती है, लेकिन कर्मों की छाप लंबे समय तक रहती है। भीड़ पर घमंड करने वालों को यह भी देखना चाहिए कि भीड़ स्थायी नहीं होती—विश्वास स्थायी होता है।

समाज में एक और खतरनाक बीमारी बढ़ रही है—दिखावे की महानता। चेहरे पर मुस्कान, भाषणों में राष्ट्रवाद, मंच पर मानवता और पर्दे के पीछे स्वार्थ! अब समय है कि चेहरों से आगे बढ़कर चरित्र को देखा जाए। जनता को नारों से नहीं, न्याय, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान से मतलब है।

मानवाधिकार केवल किताब का विषय नहीं है। यह उस गरीब का अधिकार है जो न्याय के लिए दर-दर भटक रहा है; उस विद्यार्थी का अधिकार है जो अवसर चाहता है; उस मजदूर का अधिकार है जो सम्मानजनक जीवन चाहता है; उस महिला का अधिकार है जो सुरक्षा चाहती है; और उस नागरिक का अधिकार है जो सत्ता से सवाल पूछना चाहता है।

AIHRA (All India Human Rights Association) का संदेश स्पष्ट है—मानवाधिकार किसी सरकार, दल, धर्म, जाति या व्यक्ति की जागीर नहीं हैं। मानवाधिकार हर इंसान के जन्मसिद्ध अधिकार हैं। सत्ता हो या विपक्ष, अमीर हो या गरीब, प्रभावशाली हो या आम नागरिक—कानून और मानव गरिमा के सामने सब बराबर होने चाहिए।

आज जरूरत है घमंड के विरुद्ध जवाबदेही की आवाज़ उठाने की। नेता हो तो सेवक की तरह रहो, अधिकारी हो तो संविधान के प्रति जवाबदेह रहो, धनवान हो तो समाज के प्रति संवेदनशील रहो और नागरिक हो तो अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी पहचानो।

क्योंकि — कुर्सी जाएगी, काफिला जाएगा, धन जाएगा, पद जाएगा, आज का अहंकार भी जाएगा। पीछे केवल कर्म बचेंगे और इतिहास में आपका नाम — सम्मान के साथ या शर्म के साथ!

इसलिए ऐ इंसान, ऐ हुक्मरान, ऐ ताकतवर — “किस चीज़ पर इतना घमंड तुझे?” आज समय तुम्हारे साथ है, कल समय तुम्हारा हिसाब भी ले सकता है। मानवता से बड़ा कोई पद नहीं, न्याय से बड़ी कोई सत्ता नहीं, और इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नहीं।

“What Are You So Proud Of?”

Whether it is power, wealth, position or authority—time belongs to no one.

What exactly are you so proud of? Your chair? Your power? Your wealth? Your position? Your popularity? Your influence? Or the illusion that you will remain powerful forever?

History has repeatedly shown us that those who considered their power permanent were eventually reminded by time that nothing is permanent.

Today, one of society's biggest crises is not merely corruption, inflation, unemployment or inequality. An even deeper crisis is arrogance—the arrogance of power, position, money, authority and influence.

People's representatives enter public life as servants of the people, but once they occupy the chair, sometimes the very people who elected them begin to look like a burden. Ask a question and they become angry. Demand accountability and excuses begin. Ask for rights and promises replace action.

But the fundamental question is:

Who is the real master in a democracy?

The vote that puts you in power can also remove you from power. The same people who applaud you today can demand an account of your actions tomorrow.

Therefore, treat power as a responsibility, not a privilege; a public trust, not a personal empire.

Those who take pride in wealth must remember: money can buy comfort, but it cannot buy genuine respect.

Those who take pride in position must understand: positions have an expiry date, but your actions leave a lasting footprint.

Those who take pride in crowds should remember: crowds are temporary, but trust is earned and remembered.

Another dangerous disease is spreading in society—the politics of appearances. A smile on the face, humanity in speeches, nationalism on the stage, and self-interest behind the curtain!

It is time to look beyond faces and slogans and judge people by their character, conduct and accountability.

People do not need empty promises. They need justice, employment, quality education, healthcare, security, dignity and equal opportunity.

Human rights are not merely words written in books. Human rights belong to the poor person seeking justice, the student seeking opportunity, the worker seeking dignity, the woman demanding safety, and every citizen who has the courage to question those in power.

The message of AIHRA—All India Human Rights Association—is clear: Human rights are not the property of any government, political party, religion, caste or individual. They are the birthright of every human being.

Whether in government or opposition, whether rich or poor, powerful or ordinary—everyone must stand equal before the law and respect human dignity.

Today, the world needs a stronger voice against arrogance and a stronger culture of accountability.

If you are a leader—remain a servant of the people.

If you are an officer—remain accountable to the Constitution and the law.

If you are wealthy—remain sensitive to society.

And if you are a citizen—know your rights, but also fulfil your responsibilities.

Because—

The chair will disappear.

The convoy will disappear.

The wealth will disappear.

The position will disappear.

And one day, even today's arrogance will disappear.

What will remain?

**Your actions.

Your character.

And the place you earned in history.**

So, to every human being, every ruler, every leader and every person intoxicated by power—

“What Are You So Proud Of?”

Time may be standing beside you today,

but tomorrow, time may demand an account from you.

There is no position greater than humanity.

There is no power greater than justice.

And there is no religion greater than human dignity and compassion.

